डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 फरवरी 2009 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - सातवां | अंक-दसवां | फरवरी-2010 | मासिक पत्रिका

5
अनुभव
महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविन्द
से अनमोल वचन

15
संसार
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

32
प्रेम-विरह
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 09950 55 66 71 (राजस्थान) व 09871 50 19 99 (दिल्ली)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-09928 92 53 04 व 09667 23 33 04
उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग :** रेनू सचदेवा, ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह
सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 95 | Website : www.ajaibbani.org

शुभ जन्मदिवस 6 फरवरी

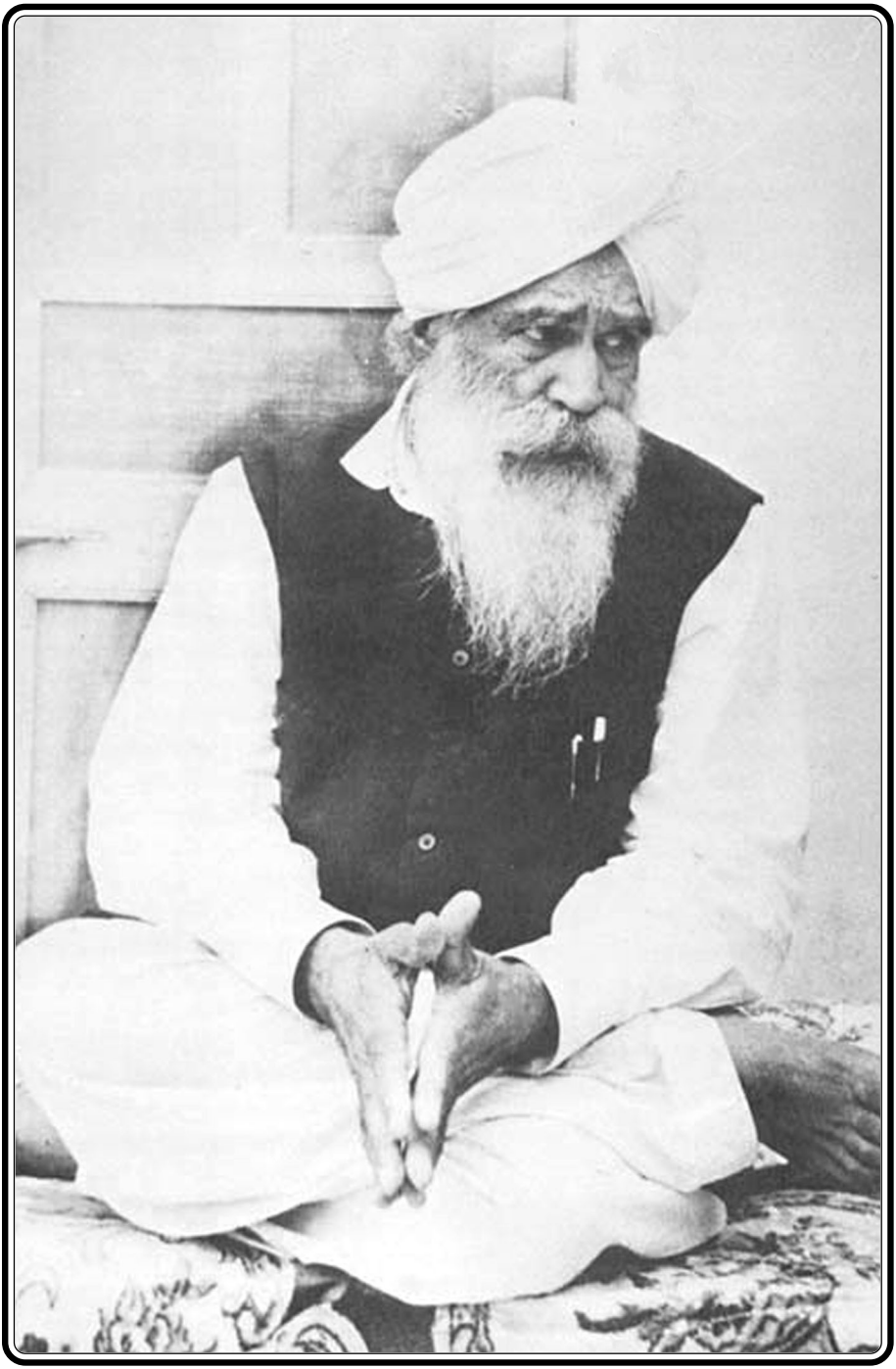

परम सन्त महाराज कृपाल सिंह जी

महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविन्द से अनमोल वचन

अनुभव

सतसंग पवित्र नाम का सिमरन करने के लिए और गुरु द्वारा बताई गई बातों को सीखने के लिए किया जाता है। हमें उन लम्बी बातों से बचना चाहिए जिनसे निराधार वाद-विवाद होता है। सतसंग ग्रहण करने वाली बात है क्योंकि गुरु की प्यार भरी ताकत हमारे मन को शान्ति देती है। जो किताबें यहाँ से प्रकाशित की जाती हैं वे दूसरी किताबों की तुलना में ज्यादा गहराई से बताती हैं और बिना किसी भय से पढ़ी जा सकती हैं अगर दूसरी किताबें भी गुरु की शिक्षा के अनुसार बताती है तो वे किताबे भी पढ़ी जा सकती हैं।

हमें अपने अंदर के **अनुभव** केवल गुरु को ही बताने चाहिए। सतसंगी को संयम और शान्ति से काम लेना चाहिए। अपनी बात को प्यार भरे शब्दों में ही पेश करें। हमें नम्रता, धैर्य और पवित्रता को कभी नहीं खोना चाहिए। निपुणता धीरे-धीरे आती है। गुरु के कहे मुताबिक चलने से हमारा हर कदम लाभदायक है। आप जितना गुरु की ओर बढ़ेंगे आपको उतना ही गुरु का प्यार और दया मिलेगी। आप अपने **अनुभव** किसी को न बताएं क्योंकि इससे आपके आगे बढ़ने की क्षमता को क्षति पहुँचेगी।

आपके अंदर त्याग की भावना होनी चाहिए। जो इस भावना को घर में नहीं पा सके वे इसे जंगलों में भी नहीं पा सकेंगे। दुनिया और दुनियावी चीजों का सिमरन करने से आप दुनिया के होकर रह जाते हैं। आपको अपने मन से दुनियावी विचार मिटाने हैं। सिमरन करते समय केवल परमात्मा को ही याद रखना है। गुरु द्वारा दिए गए 'नाम' का सिमरन करके हमें अपनी देह से ऊपर उठना है और परमात्मा का ध्यान करके दुनियावी चीजों को अपने अंदर से निकाल देना है।

हम दुख के समय परमात्मा को याद करते हैं उस समय हम हर तरफ से दवाब महसूस करते हैं अगर हम सुख के समय में भी परमात्मा को याद रखें तो दुख हमारे नजदीक नहीं आएगा। दुख हमारे नजदीक तभी आता है जब हम परमात्मा को भूलकर पाप करते हैं।

सिमरन हमारी आत्मा की दवाई है यही हमारे संकल्पो को दिन-प्रतिदिन मजबूत बनाती है। दुख का समय चाहे कितना भी कष्टदायक क्यों न हो वह समय हमें निराश नहीं कर सकता और हम हँसते-हँसते किस्मत की आँधियों को बिना किसी नुकसान के पार कर जाते हैं।

सिमरन एक जरूरी दवा है। जहाँ इंसान की सब कोशिशें नाकामयाब हो जाती हैं वहाँ सिमरन अदभुत तरीके से काम करता है। जो नामलेवा स्थिर होकर सिमरन करता है उसे कोई चिन्ता नहीं सताती। सिमरन को प्रभावशाली बनाने के लिए इसे लगातार करते रहना चाहिए। परमात्मा का सिमरन करना अपनी जिंदगी परमात्मा को अर्पित कर देने के बराबर है।

सिमरन के खजाने को दुनियावी लोगों से छिपाकर रखना चाहिए। यह ऐसा बहुमूल्य खजाना है जिसकी कीमत दुनियावी लोग नहीं समझ सकते। इस अनमोल खजाने की असलियत तभी प्रकट होगी जब आप अपनी आँखों पर पड़े पर्दे को हटाएंगे। सिमरन को प्रभावशाली बनाने के लिए इसे प्रेम-प्यार से करना चाहिए।

मुझे खुशी है कि आप परमात्मा की अलग-अलग रोशनी और आवाज के **अनुभवों** से पवित्र बने हैं। आपको सही तरीके से सिमरन करके अंदर के अनुभवों को और बढ़ाना है। यह आपके ध्यान का अनिवार्य परिणाम है जिसे आपने परमात्मा के प्यार में पूरा किया है। परमात्मा सदा आपके साथ काम करता है और जिस गुरु ने अपने गुरु की दया से दिन के उजाले में खुली आँखों से आपको पवित्र बनाया है।

जब आप परमात्मा रूपी गुरु को देखें तो आपका पूरा ध्यान गुरु की आँखों में होना चाहिए इतना कि आप खुद को भूल जाएं। जब आप

अपने अंदर ऐसी भावना उत्पन्न कर लेगें तब गुरु आपसे बात करेगा। अगर आपको कभी कोई आवाज सुनाई दे तो आप उसे अपने सामने आने के लिए कहें। पाँच शब्दों का सिमरन करने से असलियत आपके सामने आ जाएगी अगर गुरु होगा तो आपके सामने खड़ा रहेगा आप उसे सुनें।

बूँद-बूँद आसूँ का बहना मन के मैलेपन को धो देता है। वे आँखें भाग्यशाली हैं जो इस मैल को निकाल देती हैं । यह गुरु की दया है कि वह अपने बच्चों को याद रखता है। जो गुरु के कहे अनुसार चलते हैं वे गुरु की दया के समुद्र से फायदा उठा लेते हैं।

मैं आपकी गुरुभक्ति की कद्र करता हूँ। इससे आपके शारीरिक व मानसिक दुख उसकी दिव्यता में मिल जाते हैं। दयावान गुरु की ताकत आपको उस प्रताप और कीर्ति में पूरी तरह से निर्मग्न कर देती है। अपने स्वार्थ को पूरी तरह से मिटा दें और अपने अंदर की 'मैं' को भूल जाएं। मैं का त्याग करना परमार्थ के रास्ते पर एक कदम और आगे बढ़ाना है। अपने बीते हुए कल और आने वाले कल को पूरी तरह से भूल जाएं। अपने आपको उस पवित्र परमात्मा के आगे अर्पित कर दें। जीवन के अमृत को प्राप्त करने के लिए साफ बर्तन चाहिए।

मुझे खुशी है कि आप गुरु की सेवा में लगे हैं। परमात्मा आपके सिर पर खड़ा है वह आपको सही रास्ते पर डालकर आपको आपके असली घर पहुँचाएगा। जो लोग दूसरों पर गलत प्रभाव डालकर उन्हें हानि पहुँचाने की कोशिश करते हैं उनकी अपनी तरक्की में देर होती है। मैं ऐसे लोगों से भी प्यार करता हूँ, आपको भी उनसे प्यार करना चाहिए और उनके लिए परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि उन्हें अच्छा उपदेश मिले जिससे वे प्रभावित हों। जो परमात्मा को ढूंढते हैं उन्हें परमात्मा मिल जाता है।

गुरु के लिए आपका प्यार देखकर मुझे खुशी होती है। गुरु ही प्रेम का प्रतीक है और परमात्मा रूपी होने के कारण गुरु प्रेम ही

परमात्मा का प्रेम है। 'नाम' से दुनियावी लालच, स्वार्थ, घमंड और अज्ञानता दूर हो जाते हैं। गुरु शिष्य की आत्मा को परमात्मा के असली घर की ओर ले जाता है।

जब एक बच्चा गुरु का शिष्य बनकर पवित्र 'नामदान' से जुड़ता है तभी से उसे परमात्मा की भरपूर दया और सुरक्षा मिलती है। गुरु के प्रति सच्चा प्रेम हमारा बर्तन तैयार करता है जिससे वह अपनी जिंदगी बनाता है और दूसरों के लिए भी एक मिसाल बनता है। गुरु की दया से ही शिष्य के अंदर सच्चा प्रकाश होता है। यह जरूरी है कि शिष्य गुरु के वचनों का सख्ती से पालन करे ताकि हमें गुरु की दया और आशिर्वाद मिले। 'नाम' की चढ़ाई अंदरूनी **अनुभव** से नहीं बल्कि शिष्य की अपनी शान्त जिंदगी के आचार-विचार से होती है।

सच बोलना सबसे बड़ी चीज है लेकिन उससे बड़ा है सच्ची जिंदगी जीना। इंसान अपने कर्मों और अपने आस-पास के लोगों से पहचाना जाता है। जैसे ही कोई पवित्र 'नाम' से जुड़ता है उसकी चढ़ाई नियमित, निरंतर बढ़ने वाली और शान्त रूप से होने लगती है। पवित्र 'नाम' ही हमारे हृदय के अंदर खुशी की लहर लेकर आता है। सच्चे शिष्य की कोशिश एक दिन उसके लिए यश और कीर्ति के दिव्य दरवाजे खोल देती है जिससे उसे अनमोल खुशी मिलती है।

शान्ति और अकेलापन आपकी मदद करते हैं। खुशी हमें अपने कर्मों के अनुसार मिलती है। नियम पालन करने वाले शिष्य को सब कुछ बहुत ऊँचाई से देखना चाहिए और अपनी जिंदगी को बिना किसी अफसोस के स्वीकार करना चाहिए अगर आपकी चढ़ाई नियमित रूप से नहीं हो रही तो इसके लिए आपको बहाने बनाने की जरूरत नहीं।

आपको अपने किए पर विश्वास होना चाहिए। आपने नियमित रूप से विश्वास के साथ भजन पर बैठना है और सच्चे मन से गुरु को याद करना है। जब आप अपना हाथ गुरु के हाथ में देकर अपने मन को दोनों आँखों के बीच माथे पर केन्द्रित करके भजन पर बैठते हैं तो आपको ठंडक महसूस होती है। 'नाम' को दोहराने से आपकी अंदरूनी चढ़ाई में तरक्की होती है। आपका लक्ष्य केवल उस पवित्र 'नाम' की लय में बह जाने का होना चाहिए और आप सभी दूसरी तरह के सिमरन को अनसुना कर दें। भजन के दौरान 'नाम' का बार-बार सिमरन करने से सुरत लग जाती है।

प्यार से भरे हुए इंसान का हृदय बोलता है। भक्ति से भरा प्यार परमात्मा तक पहुँचाने वाले रास्ते को साफ करता है। परमात्मा का आशिर्वाद पाने के लिए हमें पूरे विश्वास के साथ परमात्मा के दरवाजे पर बैठना है। प्यारे हृदय वाला इंसान दूसरों से भी प्यार प्राप्त कर लेता है। परमात्मा आपको लक्ष्य के नजदीक पहुँचाने के लिए आपकी धार्मिक और पवित्र भावनाओं को देख रहा है।

अगर आपकी शादी करने की इच्छा नहीं है तो आपको शादी करने की जरूरत नहीं है। शादी का मकसद एक साथी का होना है जो आपके हर सुख-दुख में आपका साथ दे और सबसे ऊँची मंजिल हासिल करवाने में आपकी मदद करे। प्रेमी आत्मा केवल परमात्मा का प्यार हासिल करना चाहती है वह शादी की कोई इच्छा नहीं रखती। सच्चे मन से ऐसा करने के लिए मेरा प्यार और मेरी दुआएं आपके साथ हैं।

'नामदान' इंसान के लिए सबसे बड़ा उपहार है यह परमात्मा की दया से ही प्राप्त होता है। हमने खूनी और डकैतों के कई किस्से सुने हैं उनमें से जो गुरु रूपी परमात्मा की शरण में आए उनके अंदर भी प्यार और दया की लहर दौड़ गई।

जो बिना किसी स्वार्थ के गुरु का कार्य करते हैं निश्चित तौर पर गुरु उनकी मदद करता है और उनकी चढ़ाई होती है। जो व्यर्थ दिखावा करते हैं वे अपना ही नुकसान करते हैं।

आप एक-दूसरे को समझेंगे और एक-दूसरे के साथ प्यार से पेश आएंगे। गुरु को हमेशा अपने बच्चों की जरूरतों और इच्छाओं के बारे में पता रहता है और वह उनकी भलाई के लिए सोचता है। हमने अपने ऐबों को एक-एक करके निकाल देना है। जब हम पूरे मन से ऐसा करते हैं तो हमें यह शक्ति अपने अंदर से ही मिलती है। ऐसी कोशिश में समय लग सकता है; कोशिश जरूर करे जो गुरु के प्यारे हैं उनकी कोशिश जल्द सफल होगी।

जब आपका पूरा ध्यान दोनों आँखों से ऊपर बीच में स्थिर हो जाएगा तो 'नाम' का सिमरन करने से बेकार के विचार आपके अंदर से चले जाएंगे तब आप अपने अंदर एक गर्मी महसूस करेंगे जो ऊपर से आ रही है वह धीरे-धीरे बढ़ती जाएगी फिर आप अपने अंदर चल रहे पवित्र सिमरन को बढ़ते हुए समझ पाएंगे। अच्छी तरह तैयार की गई जमीन पर अच्छी फसल होती है।

आपके पास अंदरूनी **अनुभव** है। यह उत्तम 'नाम' हमेशा आपकी आँखों के सामने रहता है, आप इसकी गूंज सुनते हैं और अपनी खुली आँखों से भी गुरु के दर्शन कर लेते हैं। अब आपको अपने अंदर इतनी शक्ति लानी है कि प्रकाशमान गुरु आपके अंदर आ सके। गुरु धीरे-धीरे आपको ऊपर की ओर ले जाएगा अगर कोई आपसे प्रश्न करता है तो आप उसे प्यार से उत्तर दें जैसा आपके गुरु ने आपको समझाया है। यह परमात्मा रूपी रोशनी को अंदर से देखने और परमात्मा के संगीत को अंदर से सुनने का सवाल है।

जब आप भजन पर बैठते हैं तो आपको अपने शरीर के अंदर चल रही क्रियाओं के बारे में नहीं सोचना चाहिए। आपको अपने शरीर के बारे में, बाहर की वस्तुओं के बारे में; साँसो के बारे में और अंदर चल रही बिछोड़े की क्रिया की भी खबर नहीं होनी चाहिए। आपका ध्यान सिर्फ उस रोशनी के मध्य में होना चाहिए जो आपको दोनों आँखों के ऊपर बीच में दिखाई देती है।

अगर आप हर चीज को भूल जाएंगे तो जैसे मक्खन में से बाल निकाल दिया जाता है वैसे ही बिना किसी मुश्किल आपकी आत्मा ऊपर की और चढ़ाई करेगी। आप विश्वास और भक्ति के साथ प्यार से भजन करते रहे आपकी मुश्किलें दूर हो जाएंगी और आप दिन-प्रतिदिन तरक्की करते जाएंगे।

हम गुरु की सच्ची शिक्षा को सही तरीके से अपने मन में धारण करते हैं तो इससे हमारी गुरु भक्ति बढ़ती है। इसके अलावा आप आस-पास की वस्तुओं से भी दुर्लभ परम सुख प्राप्त करते हैं जिनमें आप अपने गुरु की उपस्थिति महसूस करते हैं जिससे आपको आध्यात्मिक फायदा होता है। हमें भजन से पहले उस पवित्र धुन को सुनना है जो हमारी दाहिनी और से आ रही है। सच तो यह है कि जब यह दिव्य मधुर स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई दे तो समझिए कि दयालु गुरु की ओर से बुलावा आया है आप इस धुन को ध्यानपूर्वक सुनें।

गुरु हमेशा शिष्य के साथ रहता है। मौत और दूरी का गुरु और शिष्य के रिश्ते में कोई महत्त्व नहीं है। गुरु हमेशा शिष्य के साथ खड़ा है। जो कर्म हम अपनी पवित्र आत्मा से करते हैं उससे हमें आत्मिक मुक्ति मिलती है। हमें इन कर्मों को बिना किसी आशा के करना चाहिए। आप अपने भाग्य को नियंत्रित कर सकते हैं। स्वार्थहीन भक्ति हमारा कर्त्तव्य है, यह कर्म की राह पर जीत हासिल करने का मंत्र है।

स्वार्थहीन कर्म वे होते हैं जिनके लिए हम किसी ईनाम या पहचान के अधिकारी नहीं होते। ये हम पर थोपा गया ऋण नहीं है बल्कि यह अपनी इच्छा से होता है। आपको अपने सांसारिक खर्चे पूरे करने के बाद अपने बुढ़ापे के लिए कुछ बचत करनी चाहिए अगर फिर भी कुछ बच जाए तो उसे दान कर देना चाहिए।

मुझे खुशी है कि आप शारीरिक तौर से मेरे साथ भारत में रहना चाहते हैं क्योंकि आपको लगता है इससे आपकी चढ़ाई में प्रेरणा मिलती है। मैं आपकी भावना की कद्र करता हूँ, गुरु में मन मोहने वाले शक्ति होती है। चाहे गुरु आपसे कितनी भी दूर हो वह हमेशा आपकी मदद और रक्षा के लिए आपके साथ है। आप उसकी और मुँह करके खड़े रहना सीखिए ताकि आप उसकी दया पा सकें। इसके लिए आपको रोजाना सही तरीके से भजन-सिमरन करना होगा। आप अपने समय को केवल गुरु के लिए बचाकर रखें। इस तरीके से आप जो भी समय भजन के लिए देंगे उससे आपको आगे उत्तम परिणाम मिलेंगे।

मीट, अंडे, शराब इत्यादि हमारी अंदरूनी चढ़ाई के रास्ते में रुकावट पैदा करते हैं हमें इनसे दूर रहना चाहिए अगर आपको कोई बड़ी चीज चाहिए तो छोटी चीजों को त्यागना होगा। नामलेवा के फायदे के लिए जरूरी है कि वह दृढ़ता से शाकाहारी भोजन का सेवन करे। जब हम सही पथ पर चलते हैं तो पाते हैं कि हम पूर्ण नहीं हैं, पूर्णता धीरे-धीरे आती है इसे समय चाहिए अगर कोई इस सीमा से नीचे गिरता है तो वह खुद को नुकसान पहुँचाता है।

जब आप परमात्मा और अपने आस-पास के लोगों से प्यार करते हैं तो इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किसमें विश्वास रखते हैं क्योंकि परमात्मा के दरबार का पासपोर्ट तो आपके हृदय का प्यार है न कि जाति का कोई लेबल। जब रोशनी होती है तो उसे झाड़ियों में नहीं छिपा देना चाहिए बल्कि प्यार से उसे ऐसी जगह रखना चाहिए जहाँ वह सच खोजने वालों का ध्यान आकर्षित कर सके।

हमें सच्चे पथ पर चलना चाहिए इसके लिए हमें अच्छा सोचना, अच्छा बोलना और अच्छे कर्म करने चाहिए। जो बुरा सोचता है, बुरा बोलता है या बुरे कर्म करता है वह बुराई की शक्ति को मजबूत बनाता है। जो परमात्मा से संबन्ध रखते हैं उन्हें अपने अंदर अच्छे विचारों, अच्छी बातों और अच्छे कर्मों की आग जलाकर रखनी चाहिए जिसमें परमात्मा और गुरु को छोड़कर सब कुछ राख हो जाए। सच्चे इंसान का पहला कर्त्तव्य है कि वह अपने दुश्मन से प्यार करे और उसे अपना मित्र बना ले। पापी को सच्चाई सिखाए और बुद्धि विवेक की रोशनी फैलाए। ऐसा करने के लिए किसी को भी चतुर विवेकी और साफ मन का होना चाहिए। ऐसी सच्चाई हममे तभी आएगी जब हम अच्छे विचारों, अच्छी बातों और अच्छे कर्मों के पानी से अपने आपको नहलाएंगे।

एक बार एक सभ्य आदमी ने मेरे गुरु हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के पास आकर कहा, ''यह बहुत अच्छा है कि आप 'नाम' का कीमती तोहफा सच के खोजियों को देते हैं लेकिन यह सही नहीं कि आप एक सच्चे खोजी और सबसे बड़े पापी में कोई अंतर नहीं समझते।'' उत्तर में मेरे प्यारे गुरु ने कहा, ''चाहे आपके कपड़े कितने भी मैले क्यों न हो! क्या धोबी आपके कपड़े धोने से मना करता है?'' इसी तरह जो सच्ची लगन से गुरु के पास आता है गुरु उसे खाली हाथ नहीं लौटाता।

शिष्य का 'नामदान' के बाद गुरु के साथ सीधा सम्पर्क हो जाता है। प्रतिनिधि प्रारंभिक मामलों में मदद करने के लिए हैं अगर कोई

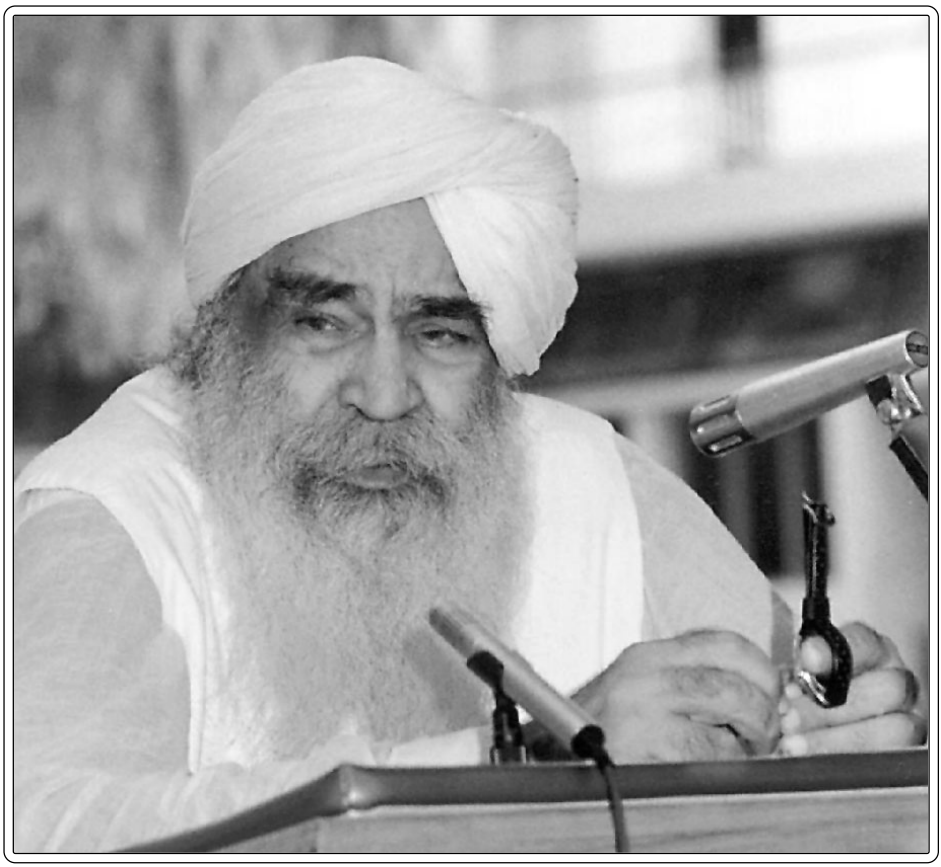

मुश्किल स्थानीय प्रतिनिधि से नहीं सुलझती तो वह सीधा गुरु के पास जा सकता है। नामलेवा की जिंदगी में तो यह और भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ऐसी चीजें आत्मा की चढ़ाई में रुकावट बनती हैं। परमात्मा हमारे अंदर है अगर हमने उससे मिलना है, उसका **अनुभव** करना है तो हमें अपने अंदर झाँकना होगा।

अगर कोई गलती करता है तो हमें सहनशील होना चाहिए ताकि दूसरे के लिए बुरा उदाहरण न बन सके। हमारा लक्ष्य 'माफ करो और भूल जाओ' होना चाहिए। मीठे वचनों का कोई मोल नहीं होता, उनका परिणाम प्रभावित करने वाला होता है।

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

संसार

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

कलयुग में 'नाम' ही जहाज है। इस युग में पार होने का उपाय 'शब्द-नाम' की कमाई है। हर रोज ही कबीर साहब की बानी पर सतसंग हो रहे हैं। गुरु ग्रन्थ साहब में कबीर साहब की बानी आती है। कबीर साहब कहते हैं:

कथा कीर्तन कल में भवसागर की नाव।
कहे कबीर जग तरन को नाहीं और उपाय।

संसार के सभी समाज कबीर साहब की बानी से अच्छी तरह वाकिफ हैं। आपके आगे कबीर साहब की बानी रखी जा रही है:

कबीर संतन की झुंगीआ भली भठि कुसती गाउ।
आगि लगउ तिह धउलहर जिह नाही हरि को नाउ।

कबीर साहब का एक सेवक ऊँचे महलों को देखकर तारीफ कर रहा था, खुश होकर कह रहा था कि आपकी छोटी सी झोपड़ी है और आपके पास काफी लोग आते हैं। आपको भी अच्छा सा मकान बनवाना चाहिए। कबीर साहब उस सेवक से कहते हैं, ''सन्त-महात्माओं की झोपड़ी अच्छी है। उन मंदिरों और ऊँचे भवनों को आग लग जाए, वे किस काम के हैं अगर उनमें परमात्मा की भक्ति नहीं होती, परमात्मा का नाम नहीं जपा जाता।''

लाहौर में बहुत कमाई वाला छज्जू भक्त हुआ है, उसके काफी सेवक थे। उसका लाहौर में छोटा सा मकान था जो ज्यादा चमक-दमक वाला नहीं था। सेवक रोजाना छज्जू भक्त के घर जाया करते थे। इस **संसार** के लोग किसी को ताना मारने से पहले सोचते नहीं कि मेरे ताना मारने से इस बेचारे का क्या हाल होगा?

ताना मारने वाले आदमी ने छज्जू भक्त के सेवक से कहा, ''तू मेरा इतना अच्छा घर छोड़कर उस झोपड़ी में क्यों जाता है? तूने आँखे बंद करके ही बैठना है तू एक-दो घंटे यहाँ बैठ जाया कर।'' इस राज के बारे में सन्त या उनके सेवक ही जानते हैं कि आँखे बंद करके बैठने से क्या मिलता है?

सन्त अपने सेवको में 'शब्द-नाम' की नींव रखते हैं। सन्त हमारे कर्मों के मुताबिक 'नाम' की थोड़ी बहुत पूंजी देते हैं आगे तरक्की करना हमारा फर्ज है। वह सेवक नाम में रंगा हुआ था। उसने कहाः

जो सुख छज्जू दे चौबारे ऐसा बलख न बुखारे।

उसने छज्जू की झोपड़ी को बलख बुखारा की बादशाही से भी ऊंचा कहकर बयान किया है क्योंकि बलख बुखारा के महलों में बैठकर हम नर्कों का सामान तैयार करते हैं। आम कहावत हैः

तपो राज राजो नर्क।

इस झोपड़ी में बैठकर हम 'नाम' की कमाई करके जन्म-मरण ही काटेंगे। जो सुख छज्जू की झोपड़ी में है वह किसी सभा-सोसाइटी में नहीं है। कबीर साहब उस सेवक को यही समझा रहे हैं कि महात्मा की झोपड़ी उन महलों से अच्छी है।

कबीर संत मूए किआ रोईऐ जो अपुने ग्रिहि जाइ।
रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट बिकाइ।।

कबीर साहब उस समय का जिक्र कर रहे हैं जिस समय आपके गुरु रामानन्द जी अपना मिशन पूरा करके **संसार** छोड़कर चले गए थे। जब एक मामूली इंसान भी हमसे बिछुड़ जाता है उस समय हमारे दिल पर बहुत बुरी गुजरती है लेकिन जब कुलमालिक बिछोड़ा दे जाए तो जिस पर यह पहाड़ टूटता है वही जानता है। गुरु अंगददेव जी कहते हैंः

जिस प्यारे स्यों न्यौं तिस अग्गे मर चलिए।
धिग जीवन संसार ताकें पाछे जीवणा।

जब गुरु नानकदेव जी ने शरीर छोड़ा तो अंगददेव जी ने कहा अच्छा होता कि जिसके साथ प्यार था मैं उससे पहले ही **संसार** छोड़ देता। मैंने बचपन में एक भजन लिखा थाः

ईक न लिखीं मेरे सतगुरु दा बिछोड़ा।
भावें छुट जाए सारा संसार लिख दे।

हे परमात्मा! चाहे तू यह लिख दे कि सारा **संसार** छूट जाए लेकिन मेरे कर्मों में गुरु का बिछोड़ा मत लिखना। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''दुख-सुख, गरीबी-अमीरी, बीमारी-तंदरूस्ती ये छह चीजें हर कोई लिखवाकर लाता है। हमारे शरीर की रचना होने से पहले हमारी प्रालब्ध बन जाती है। चाहे हम रोऐं चिल्लाएं प्रालब्ध को घटा-बढ़ा नहीं सकते। हम लाचार हैं हमें पता नहीं होता कि यह घटना क्यों घटी? वक्त पर आकर घटना घट जाती है।''

कबीर साहब उस समय की दशा बयान कर रहे हैं जब प्रेमी रो रहे थे। बेशक उस समय प्रेमियों का रोना जलते हुए पर तेल का काम करता है; कईयों में विरह-तड़प पैदा हो जाती है और कईयों का जीवन ही पल्टा खा जाता है। कबीर साहब संगत को धीरज देते हुए कहते हैंः

कबीर संत मूए क्या रोईऐ जो अपुने ग्रिहि जाइ।

उस परमात्मा के प्यारे के लिए हम क्यों रोएं वह तो अपने घर सच्चखंड से आए थे वहीं चले गए हैं। उन साकत पुरुषों के लिए रोना चाहिए जिन्होंने कभी 'नाम' नहीं जपा। जो बार-बार कभी कुत्ते, कभी बिल्ले, कभी इंसान, तो कभी हैवान के जामें में आते हैं। हमारे सतगुरु रोने के काबिल नहीं होते।

कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि।
कोने बैठे खाईऐ परगट होइ निदान।।

अब आप साकत के लक्ष्ण बताते हुए कहते हैं कि साकत बार-बार चौरासी लाख योनियों में जाता है। जिस तरह कोई आदमी लहसुन खा

लेता है वह जहाँ भी जाकर बैठता है उसके आस-पास से लहसुन की बदबू आनी शुरू हो जाती है जिससे दूसरा आदमी पहचान लेता है कि यह लहसुन खाकर आया है इसी तरह कोई आदमी धरती पर बैठकर पाप-ऐब कमाता है तो वह पाप बाहर प्रकट हो जाता है।

महात्मा हमें बताते हैं कि चाहे आप अनेक पर्दों में बैठकर पाप करें वह भी बाहर **संसार** में उजागर हो जाएगा। समझदारों की कहावत है कि आप कुएं में आवाज देंगे तो वह आवाज बाहर आएगी। आप ऐसा न सोचें कि हम जो कुछ कर रहे हैं उसका किसी को पता नहीं? हम पुण्य तो पंडितो, ज्योतिषियों से पूछकर करते हैं कि कौन सी तारीख कौन सा महीना अच्छा है लेकिन पाप करते हुए बाप-बेटे से, माँ-बेटी से सलाह नहीं करते जिसको भी मौका लगता है वह पाप कर लेता है।

सन्त इस **संसार** को दुखों-सुखों की खेती कहकर बयान करते हैं। जब परमात्मा हमारे अच्छे पुण्यों का ईनाम देता है उस समय हम सुख भोग रहे होते हैं जब पापों का दंड देता है तब हम दुख भोग रहे होते हैं। बुरे कर्मों की सजा दुख है। अच्छे कर्मों का ईनाम अच्छा दिमाग, अच्छी लियाकत और सुख है अगर हिसाब-किताब रखने वाली ताकत न होती तो हम पाप-पुण्य कुछ भी नहीं भोग रहे होते।

पुण्य तो हम लोगों को दिखाकर करते हैं, पाप लोगों को दिखाकर नहीं करते। क्या हम **संसार** में गरीब, लूले-लंगड़े और कोढ़ियों को नहीं देखते? सन्त कहते हैं कि आपको जो **संसार** दिखाई दे रहा है यह अपने आप पैदा नहीं हुआ। इसके पीछे कोई गुप्त ताकत जरूर काम करती है इसका लेखा-जोखा भी वही ताकत रख रही है। वह ताकत साँस-साँस के साथ हमारा लेखा-जोखा रख रही है।

साकत भूला हुआ है। वह कहता है कि लहसुन खाकर मेरे मुँह से बदबू नहीं आएगी अगर कोई पाप करके यह कहे कि किसी को मेरे पाप का पता नहीं लगेगा। आप **संसार** से तो छिपा सकते हैं लेकिन जो परमात्मा हमारे अंदर बैठा है वह गलती नहीं खाता।

राम झरोखे बैठके सबका झारा ले।
जाकी जैसी चाकरी ताको तैसा दे।

कबीर माइआ डोलनी पवनु झकोलनहारु।
संतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु।।

कबीर साहब कहते हैं कि हम जिस **संसार** को आँखों से देख रहे हैं यह हमारा अपना घर नहीं पराया देश है। पता नहीं किस समय आवाज लग जानी है! यह देह हवा, मिट्टी, आग, आकाश व पानी की बनी हुई है, यह सदा स्थिर नहीं रहेगी। देह एक चाटी है और दिन-रात इसमें चलने वाले श्वास इस तरह हैं जैसे हम चाटी में दूध को बिलोते हैं तो मक्खन आ जाता है अगर पानी को बिलोएगें तो झाग ही आएगी। बर्फीली घाटियों से आने वाली ठंडी हवा चाहे गर्म इलाके में आए वह हवा ठंडक ही फैलाती है।

कबीर साहब उस सेवक से कहते हैं, ''प्यारेया! सन्त-सतगुरु बर्फीले पहाड़ हैं, वे जब हमारे अंदर 'नाम' रखते हैं तब खुद 'शब्द-रूप' होकर हमारे अंदर बैठ जाते हैं फिर हमारे अंदर से आने वाले श्वास विषय-विकारों वाले नहीं होते। वे श्वास 'नाम' से भरपूर होते हैं। हमें अंदर से शान्ति आती है हमारे आस-पास बैठने वालों को भी ठंडक मिलती है। 'शब्द-नाम' की कमाई से मन शीतल हो जाता है।

सन्तों ने इस तरह मक्खन निकाला है और **संसार** छाछ पीता है। हम चाहे अच्छे कर्म करें चाहे बुरे कर्म करें उन कर्मों को भोगने के लिए हमें बार-बार **संसार** में आना पड़ेगा। हम अच्छे कर्मों का अच्छा और बुरे कर्मों को बुरा फल भोगेंगे।''

आजकल तो बर्फ जमाने के बहुत साधन हैं लेकिन मैं जिस समय का जिक्र कर रहा हूँ उस समय गर्मी के सिवाय कुछ नहीं था। पंजा साहब के आस-पास की बीबीयां अपने घर से दूध की चाटियां झरने के पास ले आती और उन चाटियों में झरने का ठंडा पानी डालकर दूध को

बिलोती थी। बीबीयां जानती हैं कि गर्मी के दिनों में दूध में बर्फ डाल दें तो मक्खन ज्यादा आता है।

कोठोहार की एक औरत ने उन बीबीयों से पूछा कि तुम अपनी चाटियां उठाकर इतनी दूर दूध बिलोने क्यों आती हो। उन बीबीयों ने कहा कि यहाँ बिलोने से बाबा ज्यादा मक्खन देता है। उस औरत ने बाजार जाकर चाटी और मधानी खरीदी। चाटी में झरने का पानी डालकर बिलोने लगी। बीबीयां तो दूध बिलोती थी वे मक्खन लेकर घर चली गई लेकिन वह औरत उसी तरह पानी में मधानी चलाती रही। आखिर उस औरत ने बीबीयों से पूछा कि तुम तो कहती हो कि बाबा मक्खन देता है लेकिन मुझे क्यों नहीं देता? उन बीबीयों ने कहा कि तू चाटी में दूध डालकर बिलो तभी कुछ निकलेगा। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

पानी मथे हाथ कुछ नाहीं, खीर मथन आलस भारा।

इसी तरह हम बाहर जितना भी कर्मकांड, जप-तप, पूजा-पाठ, पुण्य-दान करते हैं ये एक किस्म से पानी में मधानी चलाने जैसा है।

हम 'सुरत-शब्द' की कमाई करने में आलस करते हैं और कर्मकांड बहुत दिलेर होकर करते हैं जिससे हमारे हाथ में कुछ नहीं आता। हमारे मन को शान्ति नहीं आती और न ही अंदर चढ़ाई होती है। सन्त इंसानी जामें में आकर खुद फायदा उठा लेते हैं और अपने सेवकों से 'शब्द-नाम' की कमाई करवाकर उनका भी फायदा करवा देते हैं।

कबीर माइआ डोलनी पवनु वहै हिवधार।
जिनि बिलोइआ तिनि खाइआ अवर बिलोवनहार।।

मैं बताया करता हूँ कि जिसने भी 'सुरत-शब्द' का अभ्यास किया सन्तों के कहने के मुताबिक अपने जीवन को ढ़ाला, वह इस सच्चाई को झुठला नहीं सका गुरु का ही हो गया। उसने गुरु गुरु ही किया लेकिन जो लोग अंदर नहीं जाते कमाई के चोर हैं, भक्ति के चोर हैं उन लोगों को क्या पता है कि हमें क्या वस्तु मिली है?

आप कहते हैं जिन्होंने दूध को बिलोया उन्होंने मक्खन खाया जो आगे भी दूध को बिलोएंगे वे मक्खन खा लेंगे। जिन्होंने 'सुरत-शब्द' का अभ्यास किया किसी महात्मा की शरण में गए उन्होंने अपना जीवन सुधार लिया परमात्मा से मिल गए। जो आगे भी 'सुरत-शब्द' का अभ्यास, शब्द-नाम की कमाई करेंगे महात्मा की शरण में जाएंगे वे भी इसी तरह मक्खन खाएंगे।

कबीर माइआ चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि।
एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट।।

कबीर साहब के सेवक ने पूछा, ''महाराज जी! माया कैसी है, माया का क्या प्रभाव पड़ता है; माया के आने से जीवन कैसा बन जाता है?'' कबीर साहब ने कहा, ''माया चोरटी है जब इसने किसी के पास इकट्ठा होना होता है तो न पहले खबर भेजती है कि मैं अब तेरे पास आने लगी हूँ और न ही जाते समय बताती है कि मैं अब जाऊंगी तू इंतजाम कर ले।''

हमें पता ही है कि माया को प्राप्त करने के लिए हम कितने कीमती उसूल कुर्बान करते हैं। माया ने जहाँ जाकर इकट्ठी होना होता है वहाँ जाकर इकट्ठी हो जाती है। जब जाती है तो किसी बीमारी या वकीलों की फीसों में चली जाती है। जहाँ माया आ जाती है वहाँ ऐब अपने आप ही आकर टिक जाते हैं।

महात्मा हमें बताते हैं कि माया किस तरह चोरटी है? चोरों की माँ का यह कायदा था कि जब भी कोई नई दुल्हन आती तो वह दुल्हन के घर जाकर उससे प्रेम-प्यार करती। रात को दुल्हन जहाँ गहने रखती औरत उस जगह का पता लगाकर वहाँ हींग लगा आती। हींग भी लहसुन की तरह खुशबू देती है। वह अपने पाँचों पुत्रो को बता देती कि मैं हींग लगा आई हूँ जिस दरवाजे से तुम्हें हींग की महक आए वहाँ तुम्हें गहने मिल जाएंगे, इस तरह लड़के जाकर उस घर को लूट लेते।

कबीर साहब कहते हैं, ''जहाँ माया आ जाती है वहाँ इसके पाँचों पुत्र - काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार अपने आप ही आ जाते हैं। ये पाँचों इंसान के सारे शुभ कर्मों को चोरी करके ले जाते हैं। इंसान जैसा होता है वैसा ही रह जाता है। माया के आने पर अहंकार आ जाता है। दुनिया के भोग, ऐशों-इशरतें पैदा हो जाती हैं। वही मालिक के प्यारे माया से बचते हैं जो यह समझते हैं कि माया इस्तेमाल करने के लिए है और माया के आने पर उसे अच्छी जगह लगा देते हैं।''

कबीर सूखु न एंह जुग करहि जु बहुतै मीत।
जो चितु राखहि एक सिउ ते सुखु पावहि नीत।।

कबीर साहब का एक सेवक 'नाम' की कमाई छोड़कर देवी-देवताओं का उपासक बन गया। उसकी झोपड़ी में आग लगी तो उसने एक-एक देवी-देवता की आराधना की लेकिन कोई देवी-देवता उसकी मदद के लिए नहीं आया। उस सेवक ने कबीर साहब से कहा कि मैंने गणेश, शिव जी और सभी देवताओं की बहुत पूजा की लेकिन कोई भी मेरी मदद के लिए नहीं पहुँचा।

कबीर साहब ने कहा, ''देख प्यारेया! इस संसार में ज्यादा मित्र बनाकर कोई सुखी नहीं होता। जो परमात्मा की भक्ति करता है परमात्मा से प्यार करता है उसे सदा के लिए सुख मिल जाता है वह सच्चखंड में चला जाता है; सच्चखंड शान्ति और प्रेम का देश है। तू 'शब्द-नाम' की कमाई कर परमात्मा के साथ प्यार कर।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो शाम को घर आ जाए उसे भूला न समझें।''

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मन आनंदु।
मरने ही ते पाईऐ पूरन परमानंदु।।

जिस समय कबीर साहब काशी में मौजूद थे उस समय काशी में महामारी की बीमारी फैली जिसमे बहुत से आदमी मर रहे थे या काशी

छोड़कर बाहर जा रहे थे। किसी ने कबीर साहब से कहा महाराज जी आप लोगों के घरों में जाकर बीमारों की देखभाल करने में लगे हुए हैं उनकी सेवा कर रहे हैं आप भी काशी छोड़कर चले जाएं नहीं तो आप भी मर जाएंगे। कबीर साहब ने उसे प्यार से कहा, ''लोग मरने के डर से काशी छोड़कर जा रहे हैं। मुझे खुशी है कि मरने से मेरा मिलाप परमात्मा से होगा। मैं जीते जी भी परमात्मा से मिला हुआ हूँ लेकिन अभी मुझे दुनियावी कारोबार भी हैं।'' आप कहते हैंः

जब लग तागा बाहो बेही तब लग बिसरे राम स्नेही।

मैं जितनी देर नली में धागा डालता हूँ उतनी देर मेरे सिमरन में हर्ज होता है अगर मैं **संसार** छोड़ जाऊंगा तो मुझे खुशी होगी कि मैं उस परमानंद सदा के सुख को प्राप्त कर लूंगा।

राम पदारथु पाइकै कबीरा गांठि न खोल्ह।
नहीं पटणु नहीं पारखू नहीं गाहकु नहीं मोलु।।

आप जानते हैं कि आज प्रचार का युग है। आमतौर पर लोग इश्तहार निकालते हैं कि आओ! हम आपको परमात्मा दिखाएंगे। मैं एक समय गाँव किल्लेयांवाली में था। रात के समय स्पीकर लगा हुआ था वे अहंकार से बोल रहे थे कि आप झटाझट, फटाफट आ जाएं हम आपको रब दिखा देगें। उस समय मेरे साथ एक सेवादार होता था मैंने उससे कहा, ''प्यारेया! तू कई साल से मेरे पीछे लगा हुआ है मैं तुझे अभी भी परमात्मा नहीं दिखा सका ये कितना सस्ता रब दिखा रहे हैं।''

थोड़ी देर में ही उसके माता-पिता ने वहाँ आकर कहा कि पहले यह हमें खाना खिला दे। यह रोजाना हमारे साथ बुरा व्यवहार करता है। अब आप सोचकर देखें! जो अपने माता-पिता का उसूल नहीं पहचानता उसके लिए परमात्मा कैसे दरवाजा खोलेगा?

कबीर साहब कहते हैं, ''जिन कमाई वालों को नाम की ताकत, नाम की कीमत का पता लग जाता है कि नाम मीठा पदार्थ, सुच्चा पदार्थ

है वे किसी के आगे इसका दिखावा न करें। इस **संसार** में ऐसा कौन है जो इसका मूल्य दे सके, इसे परख सके?''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सतसंगी को अंदर से धुआं तक भी नहीं निकलने देना चाहिए कि मेरे अंदर कुछ है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन ग्राहक गुण बेचिए सो गुण सहगो जाए।
गुण का ग्राहक जे मिले तो गुण लाख बिकाए।

प्यारेयो! सन्त-सतगुरु **संसार** के कोने-कोने में यह वस्तु देने के लिए घूमते हैं। महाराज कृपाल ने पच्चीस साल होका दिया कि देने वाले का क्या कसूर है वह तो धुर से देने के लिए ही आया है अब सवाल तो लेने वाले का है कि क्या हम लेने के लिए तैयार हैं? हम मन-माया के जीव कहते जरूर हैं कि हम तैयार हैं आप हमें दें।

बिन मंगया सब कुछ देत है किसपे करिए अरदास।

यह मांगने की वस्तु नहीं जो मांगता है उसका हृदय साफ नहीं। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''परमात्मा तो इंसान की तलाश में फिरता है।'' जो परख रखता है उस वस्तु को संभाल सकता है वह वहाँ आकर खुद ही उस वस्तु को रख देता है। उसे कहने की जरूरत नहीं पड़ती वह कभी इश्तहारबाजी नहीं करता। वह कभी नहीं कहता कि मैं आपको भगवान दिखाता हूँ।

काफी समय पहले की बात है कि महाराज सावन सिंह जी के पास हमारे राजस्थान के दो प्रेमी गए। महाराज जी गन्ने के खेत में काम कर रहे थे। हमें पता है जब सतसंगी आपस में बात करते हैं तो वे अपने गुरु को परमात्मा कहकर बयान करते हैं। कई जिज्ञासु लोग भोले होते हैं वे उस पर विश्वास कर लेते हैं। वे प्रेमी जब सिकन्दरपुर गए तो महाराज जी ने उनसे पूछा, ''चौधरियों कैसे आए हो?'' उन्होंने कहा कि हम रब देखने के लिए आए हैं। महाराज जी ने कहा, ''तुम्हें रब भी दिखाएंगे। सन्तों के पास रब को दिखाने की युक्ति होती है।''

महाराज जी ने सेवादारों से कहा कि इन्हें गन्ने का रस पिलाओ। उस समय हमारे राजस्थान में गन्ने की खेती बिल्कुल नहीं होती थी। गुड़ बनाना मुश्किल समझते थे घी प्राप्त करना आसान समझते थे। राजस्थानी आदमी को कोई इतना दिलेर होकर गन्ने का रस पिला दे फिर उसकी खुशी का क्या ठिकाना है? वे दोनों आपस में बात करने लगे कि सरदार का दिल तो बहुत तगड़ा है हो सकता है कि यह हमें रब दिखाने वाले से मिलवा दे।

महाराज जी ने सेवादारों से पूछा कि चौधरियों को रस पिलाया। चौधरियों ने कहा हाँ जी हमने पेट भरकर रस पिया है। महाराज जी ने उन्हें गन्ने के खेत में ही बिठा लिया और कहा, ''सन्त रब नहीं होते। सन्तों के पास युक्ति होती है। परमात्मा आपके शरीर के अंदर है हम आपको युक्ति बताते हैं आप इस तरह बैठकर कमाई करें रब आपको मिलेगा। वह रब आपका है आपके लिए अंदर बैठा है।'' जिन्होंने कमाई की है वे आपको किस लहजे से, किस प्यार से समझाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि इसकी परख करने वाला कोई नहीं जो इसका मूल्य लगा देता अगर **संसार** मूल्य लगा सकता तो गुरु नानकदेव जी को कुराहिया न कहते।

कबीर साहब के वक्त हिन्दुस्तान में बहुत शक्तिशाली बादशाह लोधी सिकन्दर राज्य करता था। जब वह काशी गया तो मौलानो और पंडितों ने सारा ही जोर लगा दिया कि कबीर साहब गलत हैं। लोधी सिकन्दर ने हर तरह की कोशिश की कबीर साहब की गठरी बनाकर हाथी के आगे फैंका। डुबोने के लिए जंजीरों में बांधकर गंगा में फैंका लेकिन आपने यही कहा कि जिसे परमात्मा रखे उसे कौन मारने वाला है? आप कहते हैं:

क्या अपराध सन्त हैं कीन्हा, बांध पोट कुंचर को दीन्हा।

कबीर तासिउ प्रीति करि जाको ठाकुरु रामु।
पंडित राजे भूपती आवहि कउने काम।।

मैंने बताया था कि कबीर साहब की बानी पर रोज सतसंग होंगे। यह बानी किसी एक विषय पर नहीं बोली गई। जैसे-जैसे किसी ने सवाल किए कबीर साहब वैसा ही जवाब दे रहे हैं।

कबीर साहब का एक सेवक हमेशा सतसंग में आया करता था, वह आपका बहुत प्रेमी सेवक था। धीरे-धीरे उसका वास्ता बाहर के लोगों से पड़ गया। उसकी किसी अमीर आदमी से दोस्ती हो गई उसी के जरिए और अमीर आदमी से दोस्ती हो गई। वह सतसंग ही छोड़ गया उसे लोगों के साथ मेल मिलाप से ही समय नहीं मिलता था।

जब काफी दिनों बाद वह सतसंग में आया तो कबीर साहब ने उससे कहा कि तू तो बहुत प्रेमी था रोज सतसंग में आता था अब तुझे क्या हो गया? उसने कहा कि मेरे पास फलाना पंडित आता है, फलाना राजा आता है, फलाना सरदार आता है; मेरे पास तो समय ही नहीं है। कबीर साहब उसे समझाते हैं, ''दोस्ती उसके साथ करें जिसकी परमात्मा के साथ लिव लगी हो, जिसके अंदर परमात्मा प्रकट हो। ये पंडित, राजा तेरे किसी काम नहीं आएंगे ये तो तेरे जीते जी के दोस्त हैं, तेरे इस दुनिया के मित्र हैं इसलिए तू 'नाम-शब्द' की कमाई कर।''

कबीर प्रीति इक सिउ कीए आन दुबिधा जाइ।
भावै लांबे केस करु भावै धररि मुडाइ।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं कि देख प्यारेया! अगर हम एक परमात्मा से प्यार करते हैं तो हमारे अंदर से हर प्रकार की ईष्या, द्वैत निकल जाती है क्योंकि परमात्मा किसी खास कौम या समाज का नहीं वह किसी की पर्सनल जायदाद नहीं। कोई भी समाज परमात्मा के साथ प्यार करे, भक्ति करे उससे मिल सकता है। जब हमारे अंदर से दुविधा दूर हो जाती है तब बाहर के किसी भी रीति-रिवाज का सवाल पैदा नहीं होता। चाहे लम्बे केश रखें! चाहे सिर मुंडवा लें! चाहे जिस्म पर भगवे या सफेद कपड़े पहनें! गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

कोई ओडे नील कोई पहने सफेद।

यह तो हमारे अंदर की दुविधा है। जिस समाज में कोई केश रखता है उसे मुबारक अगर कोई केश मुंडवाता है तो वह उसे मुबारक। कबीर साहब तो यहाँ तक कहते हैं:

जो कुछ किया सो मन किया मूंडे मूंड अजाय।

अगर परमात्मा बाल मुंडवाने से मिलता होता तो इससे सस्ता सौदा और क्या था अगर बाल रखने से मिलता होता तो इसमें भी हमें कोई मुश्किल नहीं थी। आपका मन ऐब करता है, आपको गलत रास्ते पर डालता है।

सन्त-महात्मा प्यार से समझाते हैं कि परमात्मा की भक्ति करने वाले ऐसी बारीकियों में जाकर एक-दूसरे की आलोचना नहीं करते। मैं बताया करता हूँ कि सन्तों की नजर आत्मा पर होती है बुराई मन में है। आत्मा ताकत है और उस तत्व की बनी है जिसका परमात्मा बना है। परमात्मा की कोई जाति नहीं तो आत्मा की क्या जाति हो सकती है, सूरज की कोई जाति नहीं तो किरण की क्या जाति हो सकती है?

कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि।
हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि।।

कबीर साहब कहते हैं, ''यह **संसार** विषय-विकारों का जंगल है। हम इसे अच्छा समझते हैं यहाँ दाग लगे बिना नहीं रह सकते। जैसे कोई काजल के मकान में चला जाए चाहे वह अपने आपको कितना भी सुरक्षित रखे फिर भी कालिख लग ही जाती है। हम उस पर बलिहार जाते हैं जो ऐसे मकान में से ठीक-ठाक निकल जाए।'' आप कहते हैं:

जैसी उपजी पेट से तैसी निबहे ओड़।
अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़।

हम जैसे परमात्मा के पास से आते हैं अगर हमारी जिंदगी वैसी ही सच्ची-सुच्ची रहे जैसी लगन माँ के पेट में होती है। वहाँ 'नाम' के सहारे माँ के पेट में पलता है, गलता नहीं अगर हमारी वैसी ही लगन

बाहर आकर भी रह जाए तो अपना तरना तो क्या करोड़ो पुरुषों का भी उद्धार कर जाते हैं। अभी पाठी ने भजन बोला थाः

नाम दे सहारे विच पेट दे सी पलया।
लिव लगी नाम दी जरा वी ना तू गलया।

कबीर साहब कहते हैं, ''हम अंधे जीवों को क्या पता है कि हम कालिख से भरे मकान से बाहर कैसे निकलेंगे? मैं उस पर बलिहार जाता हूँ जो यहाँ से निकल जाएगा।'' हमारी आँख कौन बनाता है? मैं कहा करता हूँः

इक अक्ख कोडी दे मुल दी ऐ, इक अक्ख मोती नाल तुलदी ऐ।

जो यह कहते हैं कि रब नहीं है इसमें उनका ही कसूर है। आप किसी डाक्टर के पास जाकर आँख क्यों नहीं बनवाते? अगर हमारी आँखों में मोतिया उतर आया है तो किस तरह रोशनी आएगी? जब हम डाक्टर के पास जाएंगे वह अपने तजुर्बे के मुताबिक मोतिया का पर्दा दूर कर देगा हमारी आँखों को रोशनी देगा। हम अपनी बाकी की जिंदगी अच्छी तरह व्यतीत कर लेंगे।

सन्त-सतगुरु हमारी रूहानी आँख बना देते हैं। हम भी अपने अंदर देखने लग जाते हैं और काजल की कोठरी से बचकर निकल जाते हैं क्योंकि हमें दिखाई देने लग जाता है। हमें पता लग जाता है कि विषय-विकारों का कितना बुरा असर है। हम उन सन्त-महात्माओं पर बलिहार जाते हैं जिन्होंने **संसार** में आकर रसों-कसों और स्वादों को लात मारकर 'शब्द-नाम' की कमाई की।

कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि।
नांगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि।।

कबीर साहब जुलाहा जाति में आए थे आपने कोई खास धन-पदार्थ इकट्ठा नहीं किया। आम लोग ताना मारते कि इसके पास क्या है इस भूखे को और कुछ नहीं आता यह प्रोपोगंडा करना जानता है।

कबीर साहब काशी के ऐसे धनाढ्य लोगों को प्यार से कहते हैं, ''देखो प्यारेयो! आप तो अपने मकानों और धन-दौलत की आशा लगाए बैठे हैं अगर आप रख सकते हैं तो अपना शरीर रखकर दिखाएं। मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि आपका शरीर भी चला जाएगा। जिनके पास लाखो-करोड़ो रूपये थे मैंने उन्हें नंगे पैर जाते हुए देखा है।''

हमारे सतगुरु महाराज जी आमतौर पर महमूद गजनवी की मिसाल देकर समझाया करते थे कि उसने हिन्दुस्तान पर 17-18 हमले किए और गनीमत का बहुत सा माल लूटकर ले गया। जब उसका अन्त समय आया तो उसने अपने अहलकारो से कहा, ''यह मेरा आखिरी वक्त है मैंने जो सामान लूटा है उसे सजा दो। मीलों तक उसका सामान सजा दिया गया। वह पालकी में बैठकर रोया कि मैंने इस सामान के लिए लाखों औरतों को विधवा किया, लाखों बच्चों को यतीम कर दिया। अफसोस! आज यह सामान मेरे साथ नहीं जा रहा। उसने कहा कि जब तुम मेरी अर्थी उठाओ तो मेरे हाथ कफन से बाहर कर देना ताकि लोगों को दिखाई दे कि खाली हाथ है और मेरे बाद यह नारा लगानाः''

खाली हाथ है, जुल्म साथ है।

इसका मतलब यह है कि मेरे साथ जो होगा मैं वह भुगतूंगा कम से कम लोगों को शिक्षा मिल जाए। कबीर साहब कहते हैं कि इंसान मुट्ठी भींचकर जन्म लेता है और हाथ पसारकर चला जाता है।

कबीर इहु तनु जाइगा कबनै मारगि लाइ।
कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ।।

कबीर साहब के सेवक ने आपसे पूछा आप कहते हैं कि इंसान का शरीर एक बार हाथ से चला जाए तो दूसरी बार मौका नहीं मिलता फिर हमें क्या करना चाहिए? कबीर साहब उससे कहते हैं, ''अगर आपने जन्म-मरण के दुखों से बचना है तो किसी साधु की संगत में जाएं 'शब्द-नाम' की कमाई करें।'' मैं बताया करता हूँः

नाम जपना कल विच ओखा है शरणी पै जाणा सोखा है।

साधु की संगत में जाकर ही हम नाम प्राप्त करेंगे, अंदर जांएगे। साधु की संगत में जाकर हमें हमारी गलतियों का पता लगता है। हमारे अंदर नाम जपने का शौक, विरह और तड़प पैदा होती है। सभी सन्तों ने साधु की संगत के लिए जोर दिया है। पल्टू साहब कहते हैंः

भाग रे भाग फकीर के बालके कनक और कामिनी बाग लागा।
मार तो लेंगे पड़ा चिंचलाएगा बड़ा बेवकूफ तू नाही भागा।
ऋंगी ऋषि जैसे मार लिए बचा न कोई जो लाख त्यागा।
दास पलटू बचेगा सोई जो बैठ सतसंग दिन रात जागा।

जिसने सतसंग को ही मामूल बना लिया है वही आदमी काल के दावपेचों और धोखो से बच सकता है।

कबीर मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइ।
ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ।।

जब शहर में प्लेग फैल गई आपने कई पड़ोसियों को मरते हुए देखे तो आपका दिल उदास हुआ कि मौत किसी का लिहाज नहीं करती। आप वहाँ खड़े हुए लोगों से कहते हैं, ''दुनिया मरती तो जाती है लेकिन कोई मरना नहीं जानता। जब मरना ही है तो हमें सीखना चाहिए कि हमें किस तरह मरना है? हम जीते जी अपने फैले हुए ख्याल को शरीर से निकालकर आँखों के पीछे ले आएं इस तरह अगर हम एक बार जीवित मरना सीख लेते हैं तो दोबारा मरना नहीं पड़ता है। महात्मा इसी को जीवित मरना कहते हैं।''

बहुत से प्रेमी इंटरव्यू में बताते हैं महाराज जी! जब हमने 'नाम' लिया था उस वक्त हमने अंदर बहुत कुछ देखा। जब हमारी सुरत आँखों के पीछे आई तो हम डर गए कि कहीं मर न जाएं! फिर वे कहते हैं कि उसके बाद ऐसा कोई तजुर्बा नहीं हुआ।

प्यारेयो! मैं बताया करता हूँ कि जब हम सुरत को पैरों के तलो से समेटकर इन्द्री चक्र में आते हैं तब यह चक्र टूटता है तो पैरों में

बहुत दर्द होता है। जब हम नाभि चक्र से ऊपर जाते हैं तो नाभि चक्र टूटता है उस समय भी बहुत दर्द होता है। जब हृदय चक्र में जाते हैं तो ऐसा होता है कि हमारी जान बिल्कुल ही निकल चुकी है।

इस तरह जो अभ्यास करता रहता है उसे महारत पैदा हो जाती है रोज की आदत बन जाती है। जिस तरह खाना खाने के बाद हमें कोई तकलीफ नहीं होती उसी तरह अभ्यास के समय होता है। जब हम आँखो के पीछे आकर आज्ञा चक्र से ऊपर चले जाते हैं इसे ही जीवित मरना कहते हैं। जब हम एक बार यहाँ पहुँच जाते हैं तो मौत एक खेल बन जाती है, मौत का डर खत्म हो जाता है।

कबीर मानस जनमु दुर्लभु है होइ न बारै बार।
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार।।

सन्तों-महात्माओं को इंसानी जामें की कद्र होती है उन्होंने इस जामें में बैठकर परमात्मा को पाया होता है, अपना जीवन बनाया होता है। हम दुनियादारों को इस जामें की कद्र नहीं होती अगर कद्र होती तो हम इस जामें को विषय-विकारों में क्यों गँवा देते? हमें पता है अगर कुम्हार को लाल मिल जाए तो वह उस लाल को गधे के गले में बांध देता है अगर वही लाल जौहरी को मिल जाए तो वह उसे सिर पर रख लेता है। इसी तरह अच्छी पवित्र आत्मा को यह जिस्म मिलता है तो वह इस जिस्म से फायदा उठाते हैं बाकी के इस अमोलक जामें को विषय-विकारों में छोड़कर चले जाते हैं।

कबीर साहब ने इस जामें को कीमती हीरा कहकर बयान किया है कि यह हीरा आपको बार-बार नहीं मिलेगा। जिस तरह फल पककर जमीन पर गिर जाता है फिर हजार कोशिश करने पर भी वह डाली पर नहीं लगता। इसी तरह यह जिस्म एक बार हाथ से निकल जाता है फिर चाहे हम जितना भी खर्च कर लें! अच्छे से अच्छा डाक्टर ले आएं वह हमें जिस्म नहीं दे सकता।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

आम अक्ल कहती है कि अपनी जान की रक्षा कर और आराम से रह लेकिन ईश्क कहता है अपना सिर और प्यारी जान प्यारे प्रीतम के ऊपर से वार दे। इंसानी अक्ल ज्यादा से ज्यादा परलोक के सुखों को प्राप्त करने के लिए कहती है लेकिन ईश्क कहता है कि प्रीतम को छोड़कर कुछ माँगना दुखों का कारण है।

महदूद अक्ल समझाती है कि ईश्क वालों को जनून और पागलपन की मर्ज हो गई है; ऐ हकीमों! उनका ईलाज करो। ईश्क कहता है कि वे आदि से होशियार है। वे महदूद अक्ल के फरेब भरे सपने को देखकर अरदास करते हैं कि हे प्रीतम! इसे घोर गफलत की हालत में से निकाल फिर अक्ल या विचार की जरूरत नहीं।

सब महात्मा सतसंग करके जीवों को समझाते है कि बुद्धि से काम लेकर सत्य और असत्य का निर्णय करें। महदूद अक्ल तन से ऊपर कुछ नहीं देखती और प्रीतम के प्रेम से खाली रहती है। इंसान कितना भी समझदार क्यों न हो! समझदारी की प्रीतम के दर पर कोई पेश नहीं। जब तक इंसानी महदूद अक्ल मालिक के प्रेम में लीन नहीं होती यह शैतान की तरह गुमराही का कारण बनी रहती है।

जब महदूद अक्ल अपने अवगुणों की मैलों से साफ हो जाती है तो यह मन-इन्द्रियों की मैलों में ख्वार नहीं होती। अगर मन-इन्द्रियाँ अक्ल के आधीन हों, मालिक के रंग में रंग जाएं तो मालिक इसका रक्षक हो जाए। इंसान गुरमत को पाकर अपने प्रीतम को पा लेता है।

हजरत मौहम्मद साहब फरमाते हैं कि ऐसी अक्ल वाला हमारी जान है। उसकी रूह हमारी जान को महक देती है। ऐसी अक्ल से रहित

अहमक हैं, तू ऐसों की सोहबत से दूर हो जा क्योंकि ऐसे अहमकों ने अनेकों खूनखराबे कर दिए हैं। तू कोशिश कर कि तेरी अक्ल, अक्ल-कुल से पूर्ण हो जाए और तू फैलाव से हटकर अंदर के भेदों को देखने वाला बन जाए। इंसान को चाहिए कि महदूद अक्ल को अपना वजीर न बनाए उसकी जगह अक्ल-कुल को ही मुशीर बनाए क्योंकि महदूद अक्ल ने अक्ल के नाम को बदनाम कर रखा है। अक्ल-कुल ही सच्ची नजर को बख्शने वाली है। महदूद अक्ल हर तरफ से फैलाव में रखती है और इंसान को केवल दुनिया के व्यवहारों में फँसाए रखती है।

विवेक सहित अक्ल की हर एक इंसान को जरूरत है, इसका काम किसी मजबून को खोलकर स्पष्ट कर देना है। सत्य और असत्य को भिन्न-भिन्न करके रख देना है। गुरु नानक साहब फरमाते हैं:

धृग तिना का जीवना जे लिख लिख वेचे नाम।
खेती जिनकी उजड़ी खलवाड़े क्या थाव।
सच्चा सरमा बाहरे अग्गे लहे न दात।
अक्ल ऐह न आखिए अक्ल गँवाईए बाद।
अक्ली साहब सेविए अक्ली पाईए मान।
अक्ली पढ़कर बूझिए अक्ली कीचे दान।
नानक आखे राह ऐहो होर गलां शैतान।

जो लोग मालिक का नाम लिख लिखकर बेचने का व्यवहार करते हैं उनका जीवन धृग है, जिनकी खेती उजड़ी हुई है उनके लिए खिलवाड़ कहाँ हैं? सच्चे पुरुषार्थ के बिना मालिक की दरगाह में कोई सहारा नहीं अगर हम वादों-विवादों में अपनी अक्ल को बर्बाद कर लें तो इसे अक्ल नहीं कहते। विवेक सहित अक्ल के कारण हमें मालिक की सेवा में लग जाना चाहिए तभी हम मान प्राप्त कर सकते हैं। सोच-विचार के साथ पढ़कर उसके तात्पर्य को समझना चाहिए। अक्ल से विचार करके हमें पात्र को दान देना चाहिए। दुनिया और परमार्थ की राह में चलने के लिए यही राह है इसको छोड़कर और सब बातें शैतानी काम हैं।

....शेष अगले अंक में

धन्य अजायब

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान में अगले सतसंगों के कार्यक्रम

05 मार्च से 07 मार्च – 2010

31 मार्च से 02 अप्रैल – 2010

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 14, 15 व 16 मई – 2010 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

कम्युनिटी हाल
बेहरा इन्कलेव, पश्चिम विहार
(नजदीक पीरागढ़ी चौक)
नई दिल्ली – 110 087

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें:

राकेश कालिया	सोनू सरदाना	सुरेश चोपड़ा	राकेश शर्मा
98101-94555	98107-94597	98182-01999	98102-12138